पेरालाइ हनर्दे © ए.पी. डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में 2 मार्च को राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश और फर्स्ट लेडी लॉरा बुश का स्वागत करते राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और उनकी पत्नी गुरशरण कौर।

मिलकर चलने की राह, बना रहे हैं इतिहास

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने राष्ट्रपति की 1 से 3 मार्च 2006 के बीच राजकीय यात्रा के दौरान हुई सहमतियों और पहलों को ऐतिहासिक करार दिया। आतंकवाद से संघर्ष, अन्य लोकतंत्रों की मदद, स्वच्छ ऊर्जा विकसित करने और खेती के नए बेहतर तरीकों को प्रोत्साहन के बारे में सहयोग आगे की दिशा में बढ़े अहम कदम हैं। ये संबंधों के नए युग के महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं जिसके बारे में राष्ट्रपति बुश ने कहा, ''ये हमारी दुनिया में शांति का आधार बनाने में मददगार साबित होंगे।''

प्रधानमंत्री सिंह ने कहा, ''जिन क्षेत्रों में हम सहयोग कर रहे हैं, उनमें से बहुत-से भारत के राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक हैं।'' 2 मार्च को दोनों नेताओं द्वारा जारी पांच हिस्सों वाले अमेरिकी और भारतीय संयुक्त वक्तव्य के महत्वाकांक्षी एजेंडे में दोनों देशों की सरकारों द्वारा कृषि, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, व्यापार, निवेश, स्वास्थ्य, पर्यावरण और स्वच्छ ऊर्जा की पहल में मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता जताई गई है।

नई दिल्ली में हैदराबाद हाउस में राष्ट्रपति बुश के साथ साझा संवाददाता सम्मेलन में प्रधानमंत्री सिंह ने कहा, ''अमल में आने के बाद ये हमारे लोगों के जीवन में वास्तविक तब्दीली लाएंगे।''

नई दिल्ली में राष्ट्रपति बुश के कार्यक्रम में 2 मार्च को राष्ट्रपति भवन में औपचारिक स्वागत, अमेरिकी और भारतीय कंपनियों के शक्तिशाली सीईओ के समूह द्वारा व्यापार एवं नए तरह के कारोबार और उद्योग को रणनीतिक तरीके से बढ़ावा देने के तरीकों का विवरण, राजनेताओं से मुलाकात, धार्मिक प्रतिनिधियों से विचार-विमर्श, राजघाट पर फूल चढ़ाना, प्रधानमंत्री द्वारा दोपहर के भोज का आयोजन और राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा राजकीय रात्रिभोज की मेजबानी शामिल थी।

3 मार्च को राष्ट्रपति बुश ने हैदराबाद की यात्रा की जहां उन्होंने वादा किया कि अमेरिकी सरकार वहां भारत का पांचवा वाणिज्य दूतावास खोलेगी जिससे कि छात्रों, उद्यमियों, विशेषज्ञों और पर्यटकों के लिए वीजा लेना आसान हो और कई नई सहयोगात्मक परियोजनाओं के मद्देनजर अमेरिकी अधिकारियों से संपर्क हो सके। इनमें कृषि ज्ञान पहल सबसे अहम है जिसमें अमेरिकी और भारतीय वैज्ञानिक, तकनीशियन, आविष्कारक, किसान और अधिकारी शामिल हैं जो मिलकर (1960 के दशक की तरह) काम करेंगे और दूसरी हरित क्रांति को बढ़ावा देंगे। आंध्रप्रदेश की अपनी आरामपूर्ण यात्रा के दौरान राष्ट्रपति ने खेती और छोटे कारोबारों में लगी स्थानीय महिलाओं के स्वयं-सहायता समूहों से खुलकर बातचीत की। इसके बाद वह 400 छात्रों, अध्यापकों और उन युवा उद्यमियों से मिले जो भविष्य के सीईओ होंगे।

राष्ट्रपति उसी दिन शाम को नई दिल्ली लौट आए और पुराना किला से अपना विदाई भाषण दिया। उन्होंने भारत और अमेरिका के बीच सहज साझेदारी का जिक्र किया जो अमेरिका द्वारा भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के समर्थन से शुरू हुई। राष्ट्रपति ने दोनों देशों की मूल अधिकारों, न्याय एवं लोकतंत्र के प्रति साझी प्रतिबद्धता की बात कही। उन्होंने सुरक्षा सुनिश्चित करने, आर्थिक समृद्धि, प्रौद्योगिकीय विकास और स्वास्थ्य एवं शिक्षा के लिए ज्यादा गहरी भागीदारी का आह्वान किया। राष्ट्रपति ने कहा कि वह ''दोस्त के तौर पर'' आए हैं। **– एल.के.एल.**

सैम थॉमस/फोटो सत्य हंटर

नई दिल्ली के हैदराबाद हाउस में 2 मार्च को राष्ट्रपति बुश और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा नागरिक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में ऐतिहासिक समझौते के बाद प्रधानमंत्री सिंह ने कहा, ''हमने इतिहास रचा है।'' राष्ट्रपति बुश ने कहा, ''इस समझौते तक पहुंचना.... आसान नहीं है। लेकिन यह जरूरी समझौता है।''